

श्री आत्म-जागृति कार्यालय बगड़ी (मारवाड़)

निवेदन

जिस देश में उत्तम साहित्य का प्रचार होता है वह देश सब प्रकार के दुर्घों से छूटकर सफल सुख प्राप्त कर सकता है। भारत देश वह था जहाँ बाल (बालक) और गोपाल (कृष्णकादि) सब अष्ट साहित्य के रसिक थे। आज उसी भारत में सौ में १० पुरुष और ३ यहाँमें भी अन्ध ज्ञान तक ठीक ठीक नहीं रखता। उत्तम साहित्य की बात तो एक भार रही, जो लोग साधारण रूप से पढ़ लिय सकते हैं वे भी प्रायः अपनी शिक्षा का सदुपयोग करते नहीं दिखाई देते। आज कल विचारी उपन्यास आदि बेजा साहित्य की वृद्धि हो रही है। और कई लोगों की पठन शक्ति उनमें खय हो जाती है। भोजन शरीर का पापक है परन्तु कुपव्य भोजन करने से रोग बढ़त है वैसे ही गंदे उपन्यास आदि विकारी साहित्य के पढ़ने से लाभ के बदले हानि हो जाती है।

अब यह प्रश्न उठता है कि जब साहित्य के पाठक ही पाठक हैं तो फिर उत्तम साहित्य प्रचार की आवश्यकता ही क्या? यात यह है कि जहाँ पढ़ने वाले कम हैं वहाँ यदि उत्तम साहित्य का प्रचार किया जाय तो पाठकों की बुद्धि का विकास होता है और वे पाठक संस्कारित होकर शिक्षा प्रचार और जीवन सुधार कर सेवा कार्य करने में लग जावेंगे।

आज लाखों पढ़ लिखे आदमी जा दिखाई देते हैं उनमें भी ज्ञान, जाति और धर्म की सेवा करने का उच्च भावना वाले स्वयंसेवक कितने हैं? उत्तर स्पष्ट है। ऐसे लोगों संख्या बहुत कम है। इसी युक्ति की पूर्ति कष्टिण स्थान अज्ञान में उत्तम साहित्य का प्रचार करने के लिए आत्म-जागृति कार्यालय की स्थापना की गई है।

आरोग्य शिक्षा सम्बन्ध पुस्तकें—आरोग्य शिक्षा के बिना के बिना आज हम लोग रागी और दुखा ही रह हैं। आहार विहार तथा महन आदि हरेक काम में अज्ञान वश ऐसी गभार भरे हो रही हैं। निरागता का घातक है। इस समय में सुलभ साहित्य प्रकाशन द्वारा जनता की सेवा करना कार्यालय का एक काम होगा।

बालोपयोगी पुस्तकें—बालक ही समाज के स्तम्भ हैं। उनका क्या ही जीवन सुधार के संस्कार डालने का श्रेष्ठ समय है। यदि इस अवस्था में अच्छे संस्कार पड़े जायें तो उन्नति और सुधार में कार्य विलम्ब नहीं। इस कार्यालय की ओर से बालोपयोगी गणपति पद्य गीत आदि भाद की सुन्दर मनोरंजक पुस्तकें प्रकाशित का जावेगा।

स्त्री शिक्षा का पुस्तकें—स्त्री शिक्षा के बिना समाज का उन्नति असम्भव है। भारतवर्ष में जय तक स्त्री समाज अनिर्गन्त और अध-श्रद्धालु रहे तब तक सुधार के सभी उपाय प्रायः निरफले ही समक्षिण। कार्यालय की ओर से इस ओर साहित्य प्रकाशन आदि उपायों द्वारा प्रयत्न किया जावेगा।

समाज सुधार तथा पुस्तकें—आ विकार आदि सामाजिक रोगों के निवारणों में घुम गण है उद-दूर किण बिना भी सुधार महा हो सकता। ऐसा साहित्य भी यहाँ से प्रकाशित किया जावेगा जो जनविकारों का दूर करने में सहायक हो।

नैतिक पुस्तकें—नैतिकता धर्म का नाम है। आज नैतिक जीवन प्रायः मर-मौत हो रहा है। इसीसे हर प्रकार के शारारिक मन-नसिक व्यापारिक सामाजिक व धार्मिक दुःख बढ़ रहे हैं। जब नैतिक जीवन सुधर जावेगा तब सब दुःख दूर हो जायेंगे। इसलिए नैतिक पुस्तकें प्रकाशित होना भी बहुत आवश्यक है। यह कार्यालय ऐसा साहित्य भी प्रकाशित करेगा।

तत्त्वज्ञान—तत्त्वज्ञान से सब धर्म कलह, धर्मों-माद और दुराग्रह से

छुटकारा मिलकर आत्मा में सात्विक भावना पैदा होकर जीवन उत्तम बनना है। इसलिख तत्त्वज्ञान की पुस्तकें प्रकाशित की जावेंगी।

आरोग्यशिक्षा, बालशिक्षा, स्त्री शिक्षा, समाज-सुधार व तत्त्वज्ञान सम्बन्धी उत्तम पुस्तकें त्यागी व गृहस्थ उत्तम लेखकों से लिखाकर अल्प मूल्य व अमूल्य रूप प्रचार करना इस कार्यालय के मुख्य ध्येयों में से एक है। इसकी सफलता माननीय त्यागी महात्माभा और सद्गृहस्थ विद्वानों को कृपा सहायक प्रचारकों की उदारता, स्वयंसेवकों और पाठकों की सहायनृति पर निर्भर है।

सब के सहकार की आवश्यकता है और ऐसी परित्र शिक्षा ही के लिख स्वपर-वन्द्याण, सुख श्रेय साधक पात्र आपके सम्मुख रखा जाता है, यथाशक्ति बुद्धि, शक्ति, सेवा व धन के बीच योकर अक्षय लाभ प्राप्त करें। हम यह भी प्रयत्न करते हैं कि हरेक स्थान में इसी प्रकार सस्थायें स्थापित की जाकर उत्तम साहित्य का प्रचार किया जाय।

इस कार्यालय की ओर से जो पुस्तकें प्रकाशित होंगी सुन्दर और लाभदायक बनस्य होंगी, परन्तु उनका मूल्य सदा कम रखा जावेगा ताकि वे सर्व साधारण को सुलभ हो सकें। विचार तो यह है कि उनका मूल्य अधिकतम दो पैसे, आना दो आना ही रखा जाये। प्रायः चार आने के बदल बदल की कीमत की पुस्तकें सैवार की जायगी 'साहज पनी एक पैसे का मूल्य दा पैसे।

निवेदक—

श्रीभागमल प्रमोदकचन्द्र जाटा

तथा मगनमल फाचिटा

} मंत्री

श्री 'आत्म जागृति' कार्यालय,

यगशी (मारवाड़) चाया सोजन रोड

आत्म-जागृति ग्रन्थ माता के

ग्राहक बनने के नियम

इस माता के ग्राहक का प्रकार यह है

(१) सेवामात्री ग्राहक और (२) स्वयंसेवा ग्राहक

() समाजवादी ग्राहक के चार प्रकार हैं ।

(१) अध्ययन प्रेमा ग्राहक—जो हमेशा कम से कम एक घंटा उत्तम साहित्य स्वयं पढ़े और यथाशक्ति औरों को पढ़कर सुनावे ।

(२) विद्यार्थी ग्राहक—जो विद्यार्थी हो और एक समाजवादी कम से कम दो घंटा उत्तम साहित्य स्वयं पढ़े और यथाशक्ति औरों को पढ़कर सुनावे ।

(३) प्रचारक ग्राहक—जो इस संस्था की पुस्तकों के मिलाने के बाद पन्द्रह दिन में सम्पूर्ण पुस्तक पढ़कर दूसरे ऐसे सज्जन को देखें कि जो पन्द्रह दिन में उसे पढ़कर ऐसे ही नियम के पालक अन्य किसी को उत्तरोत्तर करे । यदि कोई ऐसा लेने वाला न मिले तो किसी सार्वजनिक संस्था में भेट देवे । यदि संस्था न हो तो सार्वजनिक पुस्तकालय खोलकर इन पुस्तकों को धर दें और उसमें अन्य उत्तम साहित्य का भी समझ करें ।

(४) सार्वजनिक ग्राहक—कोई भी पुस्तकालय, पाठशाला, कन्याशाला, समाचारपत्र, प्रधान गृहस्थ या व्यापीकाल ।

सेवामात्री चारों प्रकार के ग्राहकों को इच्छानुसार मूल्य पर या अमूल्य सब पुस्तकें भेजी जावेगी ।

अर्थदाता श्रावण—जो इच्छानुसार सहायता हर साल भेजते रहेंगे वे अर्थदाता ग्राहक गिने जायेंगे ।

नोट—मेवाभावी ग्राहकों को हर तान महीने के अन्त में भाग जिस श्रेणी के ग्राहक हैं उसक नियम का ठीक पालन हो रहा है, पेसा विवरण पत्र कायालय को अवश्य देना चाहिए । यदि छ मास तक कोई कर्त्तव्य विवरण पत्र नहीं आदेगा तो आसका उस श्रेणी से नोन अलग किया जावेगा । यदि यह सस्था उत्तम सेवा करती हुई अनुभव सिद्ध होवे तो गुण परीक्षक सज्जन इसकी खुद उन्नति करें व हर स्थान में ऐसी सस्थाएँ स्थापित करें, यही नम्र प्रार्थना है ।

विनीत—

सर्वाभागमल अमान इन्द्र जाडा, } मन्त्रा
 तथा मगामल कचिटा, }

श्री 'आत्म नागृति' कार्यालय,

यगड़ी (मारवाड) बाया सोजत रोड

प्रकाशित पुस्तके

आत्म जागृति कार्यालय से प्रकाशित पुस्तके

(१) आत्म जागृति भाषा—इसमें भावना से चरित्र बल प्रकट करके आत्मा की शक्ति का विनाश हर हालत में करते रहने का मार्ग सिद्धाया गया है । धातक, विद्यार्थी, युवक, युवति, गृहस्थ, ब्रह्म, विधुर, विधवा, साधु आदि सब के लिये उनकी अवस्था के अनुकूल अलग अलग लगभग २४ भावनायें हैं । परम हितकारी हैं, सब जाति, धर्म व अवस्था के मनुष्य के हमेशा नित्य नियम में पढ़ने योग्य हैं । लगभग एक सौ पृष्ठ की पुस्तक का नाम मात्र मूल्य दो आना ।

(२) समकित स्वल्प भाषा—इह-परलोक कल्याण की इच्छा वाले आत्माओं की नित्य नियम में रहने योग्य है । आत्म जागृति भाषा में से चुना हुआ विभाग है । लगभग २० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य एक आना ।

(३) विद्याया घ मुञ्च की भाषा—विद्यार्थी व युवकों को परम कन्याशुकारी है, दिव्य महापुरुष बनने का सरल उपाय है । हर एक व्यक्ति को अग्रय पास रहना चाहिए । पुष्ट चानोस प लगभग, शीघ्र देवता एक आना ।

(४) समकित (आत्मयाध) प्रभाकर अभाउ भाषा की पुता भाग १-२—अनेक शास्त्र व ग्रंथों में से समकित के विषय का समझ करके इसमें परम दुर्लभ समकित गुण की प्रकट करने का सरल मार्ग बताया गया है । सरल भाषा में अशुभ बोध हो सकता है । लगभग ११८ पृष्ठ के दोनो भागों का मूल्य चार आना । एक भाग की फीस दो आना ।

(५) जालगाँव—यह बालको के लिए सादी भाषा में आनन्द व शिक्षाप्रद गीतों की उत्तम पुस्तक है। सोलह पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य केवल आध आना।

(६) भाष्यत्रयपूर्वा—इसमें विस्तृत उत्तम प्रस्तावना है जिस में आचार्यवरों का आशय प्रमाद छोड़ने के हेतु इसकी शुरुआत करने का बताया गया है। वन सबे वहाँ तक ज्ञान ध्यान में ही चित्त लगाना श्रेयस्कर है। यदि यह न धने तौ पंचपरमेष्ठि के गुणों को प्रकट करने रूप क्रोधादि चार कषाय व अज्ञान त्रय की भावना पाच अशों में व्यवस्थित की है। इसलिये इसका नाम अनुपूर्वा रक्ता गया है। यह त्रिकुल नमनीता है। अतमें शांति प्रकाश के रागद्वेष निवारण व आत्मानुभव के दोहे भी दिये गये हैं। वत्तीम पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य एक आना।

निम्न लिखित पुस्तकें शीघ्र प्रकाशित होने वाली हैं—

(१) जालपोथी, (२) जैन तत्त्व प्रश्नोत्तर, (३) तैत्तिक जीवन, (४) आरोग्य शिक्षा, (५) जैनों में नवजीवन।

उपरोक्त सब पुस्तकों में बढ़िया कागज सुन्दर छपाई और बढ़िया कवर लिये गये हैं, उपरोक्त सब पुस्तकों की साइज काउन सोलह पेजी है।

हमेशा के लिये इस कार्यालय की हर कोई पुस्तक कोई भी व्यक्ति प्रकाशित कर सकता है कारण ज्ञान जीव का गुण है। उसे प्रकट करने के साधन सधके लिये ममान हैं। मत्र जीवों को सत्यज्ञान का प्रकाश होकर वे सच्चरित्र द्वारा परम सुख को प्राप्त करें यही भावना है।

व्ययस्थापक

आत्म जागृति कार्यालय, बगड़ी (मारवाड)

नम्रनिवेदन

एकबार ये पुस्तकें मँगवा कर पढ़ें, विचारें, मनन करें और प्र तरामा को पूछें कि एसा ज्ञान स्वयं प्राप्त करना व औरों को प्रप्त कराना कितना जरूरी है । यदि हितकर मालूम पड तो सूत्र प्रसार करें ।

थाकश्व पुस्तकें मँगवा कर या प्रकाशित करा कर पुस्तकालय, पाठशाला, फ-याशाला, बोर्डिंग, विद्यालय, मभा, सम्मेलन, हम्म, करियावर आदि हर स्थान और अवसर मे सुले हृदय मे प्रभावना कर ।

आमार्थ, गुरु वड माता पिता, म्नी के स्मरण मे फिजूल छरी के स्थान मे उत्तम पुस्तकें घोटकर म्नीय पवित्र आत्माओं का सुपरा मंत्र पैना कर विवेक पूण वदरता का उत्तम आदर्श उपस्थित कर ।

यह कार्य आमा का निज का है, कारण 'ज्ञान' आत्मा का गुण है 'आमा ही ज्ञान है' और 'ज्ञान ही आमा है' ।

"दु छों का मूल अज्ञान है" और "सुरगे का मूल ज्ञान है" ।

यह कार्य अज्ञान नाश करके मत्य ज्ञान प्रकट करने का साधन है । जहाँ साधन उत्तम है यहाँ शीघ्र सिद्धि होती है ।

मंत्रा

भाव अनुपूर्वि

का

स्वरूप

—

जो आत्मा के राग, द्वेष, मोहादि भाव शयुओं को जातने का उग्रम कर उन्हें जैन कहते हैं। इसीलिये जैन धर्म को स्थापने वाले महापुरुषों को अरिहन्त केव कहते हैं। 'अरि' का अर्थ है शत्रु। 'हन्त' का अर्थ है नाश करने वाले। मन्चे शत्रु क्रोधादि ही हैं और जो इन सर्व दोषों का मर्त्या नय करे वे 'अरिहन्त' होते हैं।

आज जैन धर्म एक जातीय धर्म या पक्ष विशेष हो गया है, परन्तु वास्तव में धर्म मात्र का जैनत्व—आतम शयुओं पर विजय—करना पड़ेगा और बिना आतम दोष के क्षय किये कभी मन्ची शक्ति, सत्य सुख नहीं मिलेगा, इसमें जैन धर्म के नाम को भले ही सब न स्वीकार परन्तु इसका गुण का तो सब चाहते हैं।

शास्त्र में अनुपूर्वि पढ़ने का, माता पेरने का नियम कोई न न लिये या अनुपूर्वि पचपत्र की इस शैली की किसी स्थान में नष्टि-गोचर नहीं होती है, तब आज इसका बहुत प्रचार केस है, इसकी शोच करते यह मालूम होता है कि पूर्वाचार्याने समाज की हातात नेत्रकर इसका उपदेश दिया (प्रवृत्तता की) है। जरूर उपदेशदाता तो परम उपकारी हैं परन्तु हम अनुयायी लोग ज्ञान की कमी से

नेन से दुःखा का छुटकारा होता है या गुण ग्रहण करने में ? जो नाम में ही सिद्धि होवे तो अनन्त बार नाम लिया, यह शास्त्र सिद्ध है फिर क्यों मुक्ति न हुई ? उत्तर एक ही मिलेगा कि गुण ग्रहण न किये । प्रयत्न अनुभवसिद्ध बात है कि भोजन के नाम में वृत्ति नहीं होती परन्तु भोजन करने में ही वृत्ति होती है । शास्त्रकार कहते हैं कि नाम में पुण्य प्रवृत्ति पधती है । अर्थ विचार में अल्पकम जय होता है और अनुभव अर्थात् गुण ग्रहण करने में मोक्ष होती है अर्थात् वैसे बन जाते हैं ।

अपने सब सुख, श्रेय और उन्नति को चाहते हैं तो अग्रय परीक्षापूर्वक उन्नति का मार्ग लेना चाहिये । पाँच पद अज्ञान और कपाय के त्याग से मिलते हैं । बहुत अश (तीन चौक) की कपाय व अज्ञान घटे तब क्रमशः माधु, उपाध्याय और आचार्य पद मिलते हैं । जब सब कपाय क्षय होवे तब ज्ञानावरण नाश होकर पूर्णज्ञान (केवल ज्ञान) प्रकट होता है और अरिहत बनते हैं । फिर आयु पूर्ण होते ही शरीर छूटने से सिद्ध होते हैं । इस प्रकार पाँचों पद एक ही जीव लेकर मोक्ष में जाता है (स्थूल पञ्ची तो नाम कर्म के उदय में आचार्यादि की मिलती है । यह जीव का स्वभाव नहीं है परन्तु पचपद के गुण हैं, सो जीव का स्वभाव है) अब पाँचों पदा के गुण प्रकट करने के हेतु एक उत्तम महात्मा ने यह भाव अनुपूर्वि का दान भाग्योदय में दिया है । आशा है कि यह लाभदायी होगा । इससे यह न मान लें कि माना व अनुपूर्वि गिनना सुरा है । जो प्रमादी हैं वे विष का पान करते हैं और अनुपूर्वि माना गिननेवाले दूध मिश्री का पान करते हैं । माथ में उसी ममता क्रोधादि क्षय की भावना हो तो अमृतरस के पान तुल्य फायदा

लोगों का मर्सा मान्यता से यह प्रयत्न किया है। भा आरागाग मृत्र में स्पष्ट बचन है कि 'प्रथम उपरांत नप करे' यह कथाय शाल न भवनाम होता है। पुन कहा है कि क्रोध से मान हाव, मान से कपट हाव, कपट से लोभ हाव, लोभ से रागद्वेष होय रागद्वेष से जम, जरा, मरण, नर, तिर्यच आदि के अनन्त दुःख होय और उसका धर्म दूमर हा बचन से परमाया है कि क्रोध नातन से कपट नीत, कपट जानन से लोभ जात लोभ जीतन से रागद्वेष जीत, रागद्वेष जीतन से जम, जरा, मरण, नर, तिर्यच आदि अनन्त दुःखों से छूटे। क्रोध करत समय अपना बड़ाई हा जाती है, इसास मान होय एसा कहा गया है। मान कुछ बढ़ाक हाता है, इसास फिर स्वदाय द्विपान के कारण कपट करना पड़ता है। कपट करने वाला इष्ट का लोभ करता है। लोभी का हा इष्ट से राग, अनिष्ट से द्वेष होता है और ससार का धाज ही रागद्वेष है "रागा च दोषाणि य कम्म वीथ" कामधम के कारण हा दो हैं। "नेहि धधणण रागेण दोसण" धम के चारद्वार शास्त्र से बताय गए हैं—(१) जमा (२) विनय (३) सरलता और (४) मताय। क्राधादि क्षय और गुमादि प्रगट करने की भावना दितकर है। राग के दो भू माया और लोभ हैं। द्वेष के दो भू क्रोध और मान हैं। अज्ञान से जाव क्रोधादि कथाय करता है, इमिये अज्ञान क्षय का भावना भी जरूरी है। एक मनुष्य सेठ या राजा को भजता है वह कुछ इनाम पाता है। दूमरा सेठ या राजा के शुरु धारण करता है वह उस रूपका सुरत होता है। यह क्राधादि क्षय की भावना पचपन रूप होन का काम है।

आप अनुपूर्ति पढ़ तो कृपया इस प्रकार पढ़न का यत्न करे।

यह पाच पाप के गुण प्रगट करने की ही भावना है । इससे बहुत कर्मक्षय व आत्मशांति का अनुभव होगा । क्रोध, मान, कपट, लोभ और अज्ञान घटने में इसलोक और परलोक में अतुल आनन्द प्राप्त होगा । इसको अग्रश्य अभ्यास में लें । नवीन ज्ञान सीखने-वालों को तत्त्वज्ञान और शास्त्ररहस्य ही सीगना और वहाँ शिक्षा आदि भी लेकर कपाय घटाने में उपकार बनाना । जो लोग ज्ञान पढ़ने में योग नहीं करत हैं वे उत्तम भावना का अवलम्बन समझ कर इनका पठन करे, यही विनती है । यह अतरंग दोषो के नाश की भावना है और भावना ही जीवन को पलटाने का श्रेष्ठ साधन है । जैसी भावना होती है वैसी ही सिद्धि अर्थात् प्राप्ति होती है । इसका नाम भाव अनुपूर्वि है, कारण भावों की शुद्धि करने का साधन है, अथ अकपाय को ही शुद्ध ध्यान कहा है । इसको माला की शैली से भी गिन सकते हैं । ऐसी माला गिाने से ये दोष घटकर महान् लाभ होता है ।

भाव अनुपूर्व गिाने की समस्त इम प्रकार है—

- (१) वहाँ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो ।
- (२) वहाँ मान नाश हो विनय प्रगट हो ।
- (३) वहाँ माया [कपट] नाश हो सरलता प्रगट हो ।
- (४) वहाँ लोभ नाश हो सतोष प्रगट हो ।
- (५) वहाँ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो ।

इसी प्रकार हरेक पाच विषयों की अनुपूर्वि इसमें गिन सकते हैं । जैसे पाच आचार की अनुपूर्वि—

- (१) अज्ञान नाश हो सत्यज्ञान प्रगट हो ।
- (२) मिथ्यात्व नाश हो ममक्षित प्रगट हो ।

(३) विषय कषाय नाश हो मयम प्रकट हो ।

(४) प्रमाद नाश हो शुद्ध तप प्राप्त हो ।

() कुपुण्याय नाश हो पद्धितयोग्य प्रवृत्त हो ।

पाच नवकार का अनुपाद—

(१) श्री अरिष्टतेव का नमस्कार करता हूँ मैं भी रागद्वेष मोह को नाश करने से अरिष्ट होऊँगा ।

(२) सिद्ध भगवान् का नमस्कार तो मैं भी मत्त अम-
गार करन से सिद्ध होऊँगा ।

(३) श्री आचार्य महागण का नमस्कार हा मैं भी ज्ञानादि
पाच आचार प्रकट करूँगा ।

(४) श्री उपाध्यायजा महागण का नमस्कार हो । मैं भी
ज्ञान करके उपाध्याय बनूँगा ।

(५) सकल मुनिगण को नमस्कार करता हूँ । मैं भी हिम
विषय कषाय छाड़कर मुनि बनूँगा वह दिन धन्व
होगा । इस प्रकार अन्य भी इच्छाजुमार गिन सकते हैं ।

१ क्रोध नाश हो श्रमा प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	३ कण्ठ नाश हो सखलता प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सतोष प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो
२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो श्रमा प्रगट हो	३ कण्ठ नाश हो सखलता प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सतोष प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो
१ क्रोध नाश हो श्रमा प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	३ कण्ठ नाश हो सखलता प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सतोष प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो
२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो श्रमा प्रगट हो	३ कण्ठ नाश हो सखलता प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सतोष प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो
१ क्रोध नाश हो श्रमा प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	३ कण्ठ नाश हो सखलता प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सतोष प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो
२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो श्रमा प्रगट हो	३ कण्ठ नाश हो सखलता प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सतोष प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो

1 क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	3 कण्ट नाश हो सरलता प्रगट हो	8 लोभ नाश हो सतीय प्रगट हो	2 मान नाश हो विनय प्रगट हो	4 अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो
2 कण्ट नाश हो सरलता प्रगट हो	1 क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	8 लोभ नाश हो सतीय प्रगट हो	2 मान नाश हो विनय प्रगट हो	4 अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो
1 क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	8 लोभ नाश हो सतीय प्रगट हो	3 कण्ट नाश हो सरलता प्रगट हो	2 मान नाश हो विनय प्रगट हो	4 अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो
8 लोभ नाश हो सतीय प्रगट हो	1 क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	3 कण्ट नाश हो सरलता प्रगट हो	2 मान नाश हो विनय प्रगट हो	4 अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो
3 कण्ट नाश हो सरलता प्रगट हो	8 लोभ नाश हो सतीय प्रगट हो	1 क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	2 मान नाश हो विनय प्रगट हो	4 अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो
8 लोभ नाश हो सतीय प्रगट हो	1 क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	3 कण्ट नाश हो सरलता प्रगट हो	2 मान नाश हो विनय प्रगट हो	4 अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो

१ मान नाश हो विनय प्रगट हो	३ कपट नाश हा स्मरता प्रगट हो	४ लाभ नाश हो सुताप प्रगट हा	१ शोक नाश हो क्षमा प्रगट हो	५ अमान नाश हो मान प्रगट हो
३ काट नाश हा सरलता प्रगट हा	२ मान नाश हो द्विनय प्रगट हो	५ लोभ नाश हो सस्वीप प्रगट हा	३ प्राय नाश हा क्षमा प्रगट हो	४ अमान नाश हो मान प्रगट हो
२ मान नाश हा विनय प्रगट हा	४ लाभ नाश हा मतीप प्रगट हो	२ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	२ शोक नाश हो क्षमा प्रगट हा	४ अमान नाश हो मान प्रगट हो
४ लोभ नाश हो सस्वीप प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	२ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	१ प्राय नाश हा क्षमा प्रगट हा	५ अमान नाश हो मान प्रगट हो
२ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	४ लोभ नाश हो मतीप प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	३ प्राय नाश हा क्षमा प्रगट हा	४ अमान नाश हो मान प्रगट हा
४ लोभ नाश हो सताप प्रगट हा	३ कपट नाश हो स्मरता प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	३ प्राय नाश हा क्षमा प्रगट हा	४ अमान नाश हो मान प्रगट हो

१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	३ कष्ट नाश हो सखलता प्रगट हो	४ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	५ लोभ नाश हो सतीय प्रगट हो
२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	३ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	४ कष्ट नाश हो सखलता प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	६ लोभ नाश हो सतीय प्रगट हो
३ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	४ मान नाश हो विनय प्रगट हो	५ कष्ट नाश हो सखलता प्रगट हो	६ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	७ लोभ नाश हो सतीय प्रगट हो
४ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	५ मान नाश हो विनय प्रगट हो	६ कष्ट नाश हो सखलता प्रगट हो	७ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	८ लोभ नाश हो सतीय प्रगट हो
५ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	६ मान नाश हो विनय प्रगट हो	७ कष्ट नाश हो सखलता प्रगट हो	८ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	९ लोभ नाश हो सतीय प्रगट हो

१ प्राथ नाश हो क्षमा प्रगट हो	२ मान नाश हा विनय प्रगट हो	१ अज्ञान नाग हा ज्ञान प्रगट हा	३ कपट नाग हा सरलता प्रगट हा	४ लाभ नाश हा सतोष प्रगट हो
२ मान नाग हा विनय प्रगट हा	१ प्राथ नाग हा क्षमा प्रगट हा	४ अज्ञान नाश हा ज्ञान प्रगट हो	३ कपट नाग हो सरलता प्रगट हा	४ लोभ नाग हो सतोष प्रगट हो
१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हा	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हा	२ मान नाग हो विनय प्रगट हो	३ कपट नाग हा सरलता प्रगट हो	४ लाभ नाश हा सतोष प्रगट हो
५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	१ क्रोध नाश हा क्षमा प्रगट हो	२ मान नाग हा विनय प्रगट हो	३ कपट नाश हा सरलता प्रगट हो	४ लाभ नाश हा सतोष प्रगट हा
२ मान नाश हा विनय प्रगट हो	५ अज्ञान नाग हो ज्ञान प्रगट हा	१ प्राथ नाग हा क्षमा प्रगट हा	३ कपट नाग हा सरलता प्रगट हो	४ लाभ नाश हो सतोष प्रगट हो
४ अज्ञान नाश हा ज्ञान प्रगट हो	२ मान नाग हा विनय प्रगट हो	१ क्रोध नाग हो क्षमा प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सतोष प्रगट हो

१ प्राथ नाग हा धमा प्रगट हो	३ कण्ट नाग हो सरलता प्रगट हो	१ अज्ञान नाश हो पान प्रगट हा	१ अज्ञान नाश हो पान प्रगट हो	१ अज्ञान नाश हो पान प्रगट हा	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	४ लोभ नाग हो सतोष प्रगट हो
३ कण्ट नाग हो सरलता प्रगट हो	१ प्राथ नाग हा क्षमा प्रगट हो	३ कण्ट नाश हो सरलता प्रगट हा	३ कण्ट नाश हो सरलता प्रगट हा	३ कण्ट नाश हो सरलता प्रगट हो	२ मान नाश हा विनय प्रगट हा	४ लोभ नाश हो सतोष प्रगट हो
३ अज्ञान नाग हो धमा प्रगट हो	३ कण्ट नाश हो सरलता प्रगट हा	३ कण्ट नाश हो सरलता प्रगट हा	३ कण्ट नाश हो सरलता प्रगट हो	३ कण्ट नाश हो सरलता प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सतोष प्रगट हो
३ कण्ट नाग हो सरलता प्रगट हा	३ कण्ट नाश हो सरलता प्रगट हो	३ कण्ट नाश हो सरलता प्रगट हा	३ कण्ट नाश हो सरलता प्रगट हो	३ कण्ट नाश हो सरलता प्रगट हो	२ मान नाश हा विनय प्रगट हा	४ लोभ नाश हो सतोष प्रगट हो
३ अज्ञान नाश हो पान प्रगट हा	३ कण्ट नाश हो सरलता प्रगट हो	३ कण्ट नाश हो सरलता प्रगट हा	३ कण्ट नाश हो सरलता प्रगट हो	३ कण्ट नाश हो सरलता प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सतोष प्रगट हो

२ मान नाग हा विनय प्रगट हा	२ कण्ट नास हा सुरक्षता प्रगट हो	५ अज्ञान नास हा बल प्रगट हो	१ क्रोध नाग हो भ्रमा प्रगट हा	४ लाभ नास हा सतोप प्रगट हा
२ कण्ट नाग हा सुरक्षता प्रगट हा	२ मान नाग हा विनय प्रगट हो	अज्ञान नाग हा बल प्रगट हा	१ क्रोध नाग हा भ्रमा प्रगट हो	४ लाभ नास हा सतोप प्रगट हो
२ मान नास हा विनय प्रगट हा	५ अज्ञान नाग हा बल प्रगट हा	२ कण्ट नाग हो सुरक्षता प्रगट हो	१ क्रोध नाग हा भ्रमा प्रगट हो	४ लाभ नाग हा सतोप प्रगट हो
अज्ञान नाग हा बल प्रगट हा	५ मान नास हो विनय प्रगट हो	२ कण्ट नाग हो सुरक्षता प्रगट हा	१ क्रोध नाग हा भ्रमा प्रगट हो	४ लाभ नाग हा सतोप प्रगट हो
२ कण्ट नाग हो सुरक्षता प्रगट हा	५ अज्ञान नाग हा बल प्रगट हा	५ मान नाग हो विनय प्रगट हा	१ क्रोध नास हो भ्रमा प्रगट हा	४ लाभ नास हो सतोप प्रगट हा
५ अज्ञान नास हो बल प्रगट हो	३ कण्ट नास हो सुरक्षता प्रगट हो	२ मान नाग हा विनय प्रगट हा	१ क्रोध नाग हा भ्रमा प्रगट हा	४ लाभ नाग हो सतोप प्रगट हो

१ लोच नाश हो क्षमा प्रकट हो	२ मान नाश हो विनय प्रकट हो	५ स्वामि नाश हो सत्ताप प्रकट हो	५ अज्ञान नाग हो ज्ञान प्रकट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रकट हो
२ मान नाश हो विनय प्रकट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रकट हो	४ स्वामि नाश हो सत्ताप प्रकट हो	२ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रकट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रकट हो
१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रकट हो	४ स्वामि नाश हो सत्ताप प्रकट हो	२ मान नाश हो विनय प्रकट हो	५ अज्ञान नाग हो ज्ञान प्रकट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रकट हो
४ स्वामि नाश हो सत्ताप प्रकट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रकट हो	२ मान नाश हो विनय प्रकट हो	५ अज्ञान नाग हो ज्ञान प्रकट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रकट हो
२ मान नाश हो विनय प्रकट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रकट हो	५ स्वामि नाश हो सत्ताप प्रकट हो	२ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रकट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रकट हो
४ स्वामि नाश हो सत्ताप प्रकट हो	२ मान नाश हो विनय प्रकट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रकट हो	५ अज्ञान नाग हो ज्ञान प्रकट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रकट हो

१ श्रीध नाम हो क्षमा प्रगट हा	२ मान नाम हा विनय प्रगट हो	५ अज्ञान नाम हा बुद्ध प्रगट हो	४ श्रीध नाम हो सत्योप प्रगट हो	३ कपट नाम हा सखता प्रगट हो
२ मान नाम हो विनय प्रगट हा	१ श्रीध नाम हा क्षमा प्रगट हा	४ अज्ञान नाम हा बुद्ध प्रगट हो	५ श्रीध नाम हो सत्योप प्रगट हो	२ कपट नाम हो सखता प्रगट हो
३ अज्ञान नाम हो बुद्ध प्रगट हा	१ मान नाम हा विनय प्रगट हो	२ अज्ञान नाम हा बुद्ध प्रगट हो	४ श्रीध नाम हो सत्योप प्रगट हो	३ कपट नाम हो सखता प्रगट हो
५ अज्ञान नाम हो बुद्ध प्रगट हा	३ मान नाम हा विनय प्रगट हो	५ अज्ञान नाम हा बुद्ध प्रगट हो	३ कपट नाम हो सखता प्रगट हो	५ श्रीध नाम हो सत्योप प्रगट हो
२ मान नाम हा विनय प्रगट हा	५ अज्ञान नाम हा बुद्ध प्रगट हो	३ अज्ञान नाम हा बुद्ध प्रगट हो	५ श्रीध नाम हो सत्योप प्रगट हो	२ कपट नाम हो सखता प्रगट हो
५ अज्ञान नाम हा बुद्ध प्रगट हा	३ मान नाम हा विनय प्रगट हो	५ अज्ञान नाम हा बुद्ध प्रगट हो	३ कपट नाम हो सखता प्रगट हो	५ श्रीध नाम हो सत्योप प्रगट हो

१ श्रीय माग हा क्षमा प्रगट हा	५ अन्य नाग हो सत्ताय प्रगट हो	६ अन्य नाग हो ज्ञान प्रगट हो	७ माग नाग हो विनय प्रगट हो	८ अन्य नाग हो सत्ताय प्रगट हो	९ अन्य नाग हो सत्ताय प्रगट हो
२ अन्य नाग हा सत्ताय प्रगट हो	१ श्रीय नाग हो क्षमा प्रगट हो	२ अन्य नाग हो ज्ञान प्रगट हा	३ माग नाग हो विनय प्रगट हो	४ अन्य नाग हो सत्ताय प्रगट हा	५ अन्य नाग हो सत्ताय प्रगट हो
३ श्रीय नाग हो क्षमा प्रगट हो	४ अन्य नाग हो ज्ञान प्रगट हा	५ अन्य नाग हो सत्ताय प्रगट हो	६ माग नाग हो विनय प्रगट हो	७ अन्य नाग हो सत्ताय प्रगट हो	८ अन्य नाग हो सत्ताय प्रगट हो
४ अन्य नाग हो सत्ताय प्रगट हो	५ अन्य नाग हो सत्ताय प्रगट हो	६ अन्य नाग हो सत्ताय प्रगट हो	७ अन्य नाग हो सत्ताय प्रगट हो	८ अन्य नाग हो सत्ताय प्रगट हो	९ अन्य नाग हो सत्ताय प्रगट हो

२ मान नाग हो विनय प्रगट हो	४ एभ नाग हो सतोष प्रगट हो	१ अज्ञान नाग हा प्रान प्रगट हो	१ शोध नाग हो क्षमा प्रगट हो	३ कपट नाग हो सरलता प्रगट हो
३ लोभ नाश हा सताप प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो	१ अचान नाश हो शान प्रगट हो	१ काय नाग हा क्षमा प्रगट हो	३ कपट नाग हो सरलता प्रगट हो
२ मान नाश हा विनय प्रगट हो	४ अज्ञान नाग हो शा प्रगट हो	४ लोभ नाग हा सतोष प्रगट हो	१ माध नाग हा क्षमा प्रगट हो	३ कपट नाग हो सरलता प्रगट हो
४ अज्ञान नाश हो शान प्रगट हो	२ मान नाग हा विनय प्रगट हो	४ लाभ नाग हा सतोष प्रगट हो	१ शोध नाग हा क्षमा प्रगट हो	३ कपट नाग हा सरलता प्रगट हो
४ लोभ नाश हा सतोष प्रगट हो	४ अचान नाश हो मान प्रगट हो	२ माद नाग हा विनय प्रगट हो	१ शोध नाश हा क्षमा प्रगट हो	३ कपट नाग हा सरलता प्रगट हो
१ अज्ञान नाग हो शान प्रगट हो	४ लोभ नाग हो सतोष प्रगट हो	२ मान नाश हा विनय प्रगट हो	१ शोध नाग हो क्षमा प्रगट हो	३ कपट नाग हो सरलता प्रगट हो

१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	५ लोभ नाश हो सतोष प्रगट हो	१ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	२ माग नाश हो विनय प्रगट हो
२ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	५ लोभ नाश हो सतोष प्रगट हो	१ अपान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो
१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	५ लाभ नाश हो सतोष प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	५ अपान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो
५ लोभ नाश हो सतोष प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	१ अपान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	२ माग नाश हो विनय प्रगट हो
३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	५ लोभ नाश हो सतोष प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो
५ लोभ नाश हो सतोष प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	१ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो

१ क्रोध नाग हा क्षमा प्रगट हा	३ वपट नाग हो सुरता प्रगट हो	५ अन्ध नाग हा नाग प्रगट हा	४ लास नाग हा सुरोप प्रगट ना	२ मान नाग हा विनय प्रगट हो
२ कट नाग हो सुरता प्रगट ना	१ क्रोध नाग हा क्षमा प्रगट हा	५ अन्ध नाग हो चन प्रगट हा	४ लास नाग हा सुरोप प्रगट हा	२ मान नाग हो विनय प्रगट हो
३ क्रोध नाग हा क्षमा प्रगट हो	४ अन्ध नाग हा चान प्रगट हा	३ वपट नाग हा सुरता प्रगट हो	५ अन्ध नाग हा सुरोप प्रगट ना	१ मान नाग हो विनय प्रगट हा
४ अन्ध नाग हा सुरता प्रगट ना	५ क्रोध नाग हा क्षमा प्रगट हा	३ वपट नाग हा सुरता प्रगट हा	४ लास नाग हो सुरोप प्रगट ना	२ मान नाग हा विनय प्रगट हा
५ अन्ध नाग हा सुरता प्रगट हा	३ क्रोध नाग हा क्षमा प्रगट हा	५ अन्ध नाग हो चान प्रगट हा	५ अन्ध नाग हो सुरोप प्रगट ना	३ मान नाग हो विनय प्रगट हो

१ श्रीध नाग हो क्षमा प्रगट हो	४ लोभ नाग हो सतीष प्रगट हो	१ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	३ कपट नाश हो क्षरत्ता प्रगट हो	२ मान नाश हो नित्य प्रगट हो
४ लोभ नाग हो सताप प्रगट हो	१ क्रोध नाग हो क्षमा प्रगट हो	५ अज्ञान नाग हो ज्ञान प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो
१ श्रीध नाग हो क्षमा प्रगट हो	५ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सतीष प्रगट हो	३ कपट नाग हो रूपट नाग हो सरलता प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो
४ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	१ लोभ नाग हो क्षमा प्रगट हो	५ क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो
१ श्रीध नाग हो क्षमा प्रगट हो	४ लोभ नाश हो सतीष प्रगट हो	१ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	३ कपट नाश हो सरलता प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो

३ कपट नाग हो सुरलता प्रगट हा	४ लोभ नाश हा सतोप प्रगट हो	१ अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हो	१ भाय नाश हो क्षमा प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो
४ लोभ नाग हो सतोप प्रगट हो	३ कपट नाग हो सुरलता प्रगट हो	४ अज्ञान नाग हो ज्ञान प्रगट हो	१ मोघ नाग हो क्षमा प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो
३ कपट नाश हा सुरलता प्रगट हो	४ अज्ञान नाग हो ज्ञान प्रगट हो	४ लाभ नाग हो सतोप प्रगट हो	१ क्रोध नाग हो क्षमा प्रगट हो	२ मान नाश हो विनय प्रगट हो
४ अज्ञान नाग हा ज्ञान प्रगट हो	३ कपट नाश हो सुरलता प्रगट हो	४ लोभ नाग हा सतोप प्रगट हो	१ माय नाश हा क्षमा प्रगट हा	२ मान नाग हो विनय प्रगट हो
४ लोभ नाश हा सतोप प्रगट हो	१ अज्ञान नाग हा ज्ञान प्रगट हा	३ कपट नाग हो सुरलता प्रगट हो	१ मोघ नाग हो क्षमा प्रगट हो	२ मान नाग हो विनय प्रगट हो
४ अज्ञान नाग हा ज्ञान प्रगट हो	४ गम नाग हा सतोप प्रगट हो	३ कपट नाग हो सुरलता प्रगट हो	१ मोघ नाग हो क्षमा प्रगट हो	२ मान नाग हो विनय प्रगट हो

मान नाश हो प्रिय प्रगट हो	कण्ठ नाश हा सरलता प्रगट हो	अज्ञान नाश हो पान प्रगट हो	लोभ नाश हा सतोप प्रगट हा	क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो
कण्ठ नाश हो सरलता प्रगट हो	मान नाश हा प्रिय प्रगट हो	अज्ञान नाश हा ज्ञान प्रगट हो	लोभ नाश हा सतोप प्रगट हा	क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो
मान नाश हो विनय प्रगट हो	अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हा	कण्ठ नाश हा सरलता प्रगट हो	लोभ नाश हो सतोप प्रगट हो	क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हा
अज्ञान नाश हा पान प्रगट हा	मान नाश हो विनय प्रगट हा	कण्ठ नाश हा सरलता प्रगट हा	लोभ नाश हो सतोप प्रगट हो	क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो
कण्ठ नाश हो सरलता प्रगट हो	अज्ञान नाश हो ज्ञान प्रगट हा	मान नाश हो विनय प्रगट हो	लोभ नाश हो सतोप प्रगट हो	क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हो
अज्ञान नाश हो पान प्रगट हो	मान नाश हा सरलता प्रगट हो	मान नाश हो प्रिय प्रगट हा	लोभ नाश हो सतोप प्रगट हा	क्रोध नाश हो क्षमा प्रगट हा

सद्गुणदेश

प्रेम सहित वन्दौ प्रथम, जिनपद कमल अनूप,
 ताके सुमरत अधम नर, होवत शान्तस्वरूप । १ ।
 तुव शरणे आयो प्रभू राखि लेउ निज टेक ।
 निर्विकल्प मम सिद्धजी, देवो विमल विवेक । २ ।

राग निवारण अंग

अरे जीव भव बन विचै, तेरा कौन सहाय ।
 जिनके कागण पचि रघ्या, तैंतो तेरे नाय ॥ १ ॥
 समारी का देखिले सुखी न एक लगाय ।
 अत्र तो पीछा छोड़िदे, मत धर सिरपे भार ॥ २ ॥
 मूठे जग के कारणे, तू मत कर्म बंधाय ।
 तू तो रीता ही रहै, बन पैला ही खाय ॥ ३ ॥
 तन, धन सपति पाय के मगन नही मन भाय ।
 कैसे सुखिया हो गया, सोत्रे लाय लगाय ॥ ४ ॥
 ठाठ देख भूले मति ए पुद्गल परमाय ।
 देखत देखत थाहरै जासी धिर न रहाय ॥ ५ ॥
 लूटेगा ज्ञानादि धन, ठग सम यह ससार ।
 मीठे बचन उचारि के, मो फौंसी गल डार ॥ ६ ॥
 किधौ भूत तोखौ लग्यो, करे न तनक विचार ।
 ना माने ता पर खिने, मत अत्र को ससार ॥ ७ ॥
 काया ऊपर थाहरै, सत्र सू अधकी प्रीत ।
 या तो पहले सनन मे, देगी दगो नचीत ॥ ८ ॥

विषय दुग्धन को सुग्न गिनै कौं कहीं लगी भूल ।
 और छता अथा हुआ जाणपणा मे भूल ॥ ९ ॥
 निन प्रति दीरत हो रहे उँ अस्त गति मान ।
 अजहुँ न ज्ञान भयो कहुँ तू तो बडो अमान ॥ १० ॥
 किसने कहे निचित तू सिर पर फिर जुकाव ।
 बाधे है तो बाध ल पानी पहिले पाल ॥ ११ ॥
 आया सो सन ही गया अवताराणि विशेष ।
 तू भा या ही जायगा इण में मीन न मेप ॥ १२ ॥
 या असग फिर ना मिलै अपनो मततान साग ।
 चुकते दान चुकाय दे अब मत राग उधार ॥ १३ ॥
 वैसे गाफिल ही रहा निबडा आ तकरार ।
 निपजा सेती नेय क्या बाटी सटे गैसाग ॥ १४ ॥
 धर्म निहार नियो नहीं कीनो विषय निहार ।
 गठ राय रीत चले आर जग हटवार ॥ १५ ॥
 कान करत पर घरन के अपना काज निगार ।
 मोत निवार जगत का अपनी सुपरी धार ॥ १६ ॥
 नहीं विचार तैं किया करना था क्या काज ।
 उँ हो गया कर्म फन तब उपजेगी लाज ॥ १७ ॥
 मूठे समारान की छुटेगी जब लाच ।
 इनसों अलगा होयगा तन सुधरेगा काज ॥ १८ ॥
 अपना पृ जी मू करौ निश्चत कार निहार ।
 बाण्या मो हा भोग ले मति कर और धार ॥ १९ ॥
 नया कम शृणु कादि के करसी कार निहार ।
 देण पडसी पार का किम होसी छुटकार ॥ २० ॥

विषय भाग किं पाक सम, लसि दुग्ग फल परिणाम ।
 जब प्रिरक्त तू होयगा, तत्र सुधरेगा काम ॥२१॥
 यर मन मेरे पथिफ^१, तून जाव वहँ ठोर ।
 बटमारा पाँचू^२ जहाँ करै साह कू धोर ॥२२॥
 आरम्भ विषय कपाय कू, कीनी बहुत हि वार ।
 कटु कारज भरिया नहीं, उलटा हुआ सुगार ॥२३॥
 चारै सज्ञा मे मना, सुनै निपुन पित ताग ।
 गुर समझारे कठिन सूँ, उपजै तउन वेराग ॥२४॥
 खैर हुआ जो कुछ हुआ, अब करना नहिं जोग ।
 विना विचारे तैं किया, ताको ही फन भोग ॥२५॥

द्वेषनिवारण अंग

घुरा कहे कोउ तो भनी, तो तू भला जु मान ।
 घुरा मीठा होय है, सत्र घनि है पकमान ॥ १ ॥
 कटु तात्तण अति विष भरी, गाली राख समान ।
 अशुभ कर्म गुम्भट भियो, योजिय सुनटी जान ॥ २ ॥
 कटु वचन को कहनिया, लगजुदिल म तार ।
 समन्धि चू समझो, जो जान्या अतिवार^३ ॥ ३ ॥
 वैरी होता तो कनहु नहिं कहता कुटु धात ।
 सज्जन^४ सै माहिरा, रुज लसि कटु^५ रखास ॥ ४ ॥
 औगुन सुनिक आपणा, रेमन सुलटी धार ।
 मौ^६, गरीम कू जानि के लीना योभ उत्तार ॥ ५ ॥

१ मुग्गाफिर २ शब्द रस, रूप, गंध, स्पर्श पाँच इंद्रियों के भोग
 ज्ञान व आत्मिक सुख को लट्टन वाले भाव । ३ आहार । ४ भूल अंगुम
 कर्तव्य । ५ बलवान् ६ राग । ७ कडवा औषधि ।

मैं भूल्यो शुभ राह कैं इसने दंड घताय ।
 दुर्जन जानि परे नहीं सज्जन हो दरसाय ॥ ६ ॥
 अस्त ज्ञान सूरज हुआ, मैं भूल्यो निज हाथ ।
 निंदा रूप मसाल ले श्णे दिर्राई राह ॥ ७ ॥
 सुनि निन्दक के वचन धु चित मति करै उचाट ।
 यह दुर्गंधित पवन अति घदतां कू मत डाल ॥ ८ ॥
 कुवचन शर क्या कर सनै तू होजा पापान ।
 तेरो कट्टु विगरे नहा बाका ही अपमान ॥ ९ ॥
 कुवचन गोली के लगे जो ले मनकू मार ।
 आपहि ठण्टी होयगी होना शतल गार ॥ १० ॥
 तैने उपर सैं बहा, मैने समझी ठेठ ।
 मय ही खटका मिट गया एक रह गया पेट ॥ ११ ॥
 रे चेतन सुनटा समझ तेरा सुधरया कान ।
 कुवचन धरवर धाहरी इणने सौंपी आज ॥ १२ ॥
 होगी सोहि नोसरै वस्तु भरी जिहि माहि ।
 या का गाहक मति बनै तरे लायन नाहि ॥ १३ ॥
 अपना अवगुण सुण करी, मति जाने जिय रीस ।
 मन में तू यू समझलै मूनें ॐ आसीस ॥ १४ ॥
 क्रोध अगनि दिल मति लगा सुन अजधारध बोल ।
 चमा रूप जल छिडकिये नेक न लागै मोल ॥ १५ ॥
 दुर्जन घुप है है नहीं, तू तो छिन घुप साध ।
 तन तिन परि है अगनिकु आपहि होम ममाधि ॥ १६ ॥
 तू तृण सम कट्टु वचन सुनि क्रोध अगनि मति माकि ।
 अपन^२ नोर मम करहु मन, तन मिलि हैं शिवराज ॥ १७ ॥

आई गई करि गालि कू, क्रोध चढाल समान ।
 नतर पिदान चढालनी, पक्षे पकड़ें थान ॥१८॥
 पुत्र महाय नहीं होंहिगे, रे जिय सक्ची जान ।
 क्रोध करीयू होयगो, माधू रजक समान ॥२०॥
 आत्म^१वस्त्र मैना लखि, इणनै मीना घोय ।
 कटुकवचन साबुन करी, निवल जानिके मोय ॥२१॥
 जौहरि होके मति करै, कुजडी के मग रार ।
 रतनः बिखरसी थाहरा, भाजो सटे गँवार ॥२१॥
 साला की गाती दई, ए विचार चित ठारि ।
 भगनी सम इणकी प्रिया, इम सममो व्रत धारि ॥२२॥
 किरतधनी वननी नहीं, दई गार इण मोण ।
 अस आतम सीतल करौं, मम उधार तत्र होय ॥२३॥
 गारी एकहि होत है, बालत होत अनेक ।
 रे जिय तू बौलै नहीं, तो वही एक ही एर ॥२४॥
 अनत काल बोले प्रभू, देख ररे यह भाय ।
 परि है कटु वच श्रवन में, ते किमि टाले जाय ॥२५॥

अनुभव विचार तथा ज्ञान अंग

वृकस विषयविकार मम, मति भगि मूढ गँवार ।
 अनुभवरम तू चाखिलै गुरु मुग्र कगि निरधार ॥१॥
 पाठ किये तैं एर गुन, अनुभव किये हजार ।
 ताते मनत्रु रोक्कि के क्यों नै करे विचार ॥ २ ॥

१ धोधी २ "निदा करने वाला मेरे पाप दोष रूपी मैल को धोता है ।" य शब्द प्रगट में कहन से जिरोधी का अपमान होता है और सगदा यदता है इमलिण कोइ उत्तम जीव की निष्कारण निदा का तो मन में समसन का यह बात है । ३ यह भी मन में रखना ।

किण पाठ अनुभव विना, मित्रे न भातर पाप ।
 जाहर नीसा धोय न, करा चहे तू साफ ॥ ३ ॥
 अल्प भार पापान को, निमि लागे जल माहि ।
 तिमि अनुभवविच कम को, बहु बधन है नाहि ॥ ४ ॥
 मन बच, तन थिरतै हुबै, जो सुख अनुभव माहि ।
 इन्द्र नरेंद्र फनिंद के, ता समान सुख नाहि ॥ ५ ॥
 अनुभव म प्रभु मिलत है, अनुभव सुख का मूल ।
 अनुभव वितामणि तजी मति भटकै कहूँ भूल ॥ ६ ॥
 अति अगाध ससार नद विषय नीर गभार ।
 अनुभव विन पार न लहै कोटि करहु तद्वार ॥ ७ ॥
 निहि विचार तै पाय हैं मन बू थिर सुख ठौर ।
 ताकू अनुभव जानि लै अनुभव नहि कतु ओर ॥ ८ ॥
 विना विचारे ज्ञान के, तू जगल का रोज ।
 मिथ्या बूझी पचत है क्या न करे अर रोज ॥ ९ ॥
 मन मतग बश करन नृ ज्ञानाकुम चित धार ।
 नमा छत्तौ बाधिकै लजा अलल डार ॥ १० ॥
 भ्रमतो मन रवि ढाटले, ज्ञान मुकर क म्यान ।
 विदु शुद्ध ज्ञयाग मे कम तूल का हान ॥ ११ ॥
 गीसा सम ससार है गुरु कृपा आदित्त ।
 ज्ञान नान विन किम लखै आपन पौ सुप्रित्त ॥ १२ ॥
 विषय वामना करत जा आवे ज्ञान जगीस ।
 तसठ काग्न समय में धिन म होय छतीस ॥ १३ ॥
 जो तू चाहे ज्ञान सुख तो विषयन मन फर ।

१ काच २ मूय ३ ज्ञान स विषय की चरचि हारा है ।

और जगह भटके मती, अपन ही में हेर ॥१४॥
 ज्ञान रूप शीपक करने, वचे न रम पतग ।
 जो रहता दोनून में, मूठो एक प्रसग ॥१५॥
 ज्ञान मचरे जिहि समय, रहै न कर्म समाज ।
 और न पडि इटि मजै, जहा वमरा बाज ॥१६॥
 पर नहीं छुट्यो एक सौं, छुट्या कर्म बुझग ।
 ज्ञान तणा मतभग थी, तेष्यो ठाणा यग ॥१७॥
 पण इक ज्ञान विचार ले, विषय त्रुष्टि को फेर ।
 मरी मरी त्याग दे, यों हारे सुरभेर ॥१८॥
 अष्ट पहर ढिग राखिल, ज्ञान स्वरूपा ढाल ।
 मोह अरि के विषय शर, लगे न ताकी भाग ॥१९॥
 मोया मोह निवार कै, विषयन सों मन स्वीच ।
 जो सुख। चाहै आपणा, रहै ज्ञान ते पाच ॥२०॥
 मेद लहै तिन ज्ञान के, मति भूसै ज्यू खान ।
 लोक गडरिया चाल तजि आपन पै पहिचान ॥२१॥
 जगत मोह फासी प्रवत, करै न और उपाय ।
 सासगत कर ज्ञान की, सहज मुक्त हो जाय ॥२२॥
 काम धेनु अरु कल्प तरु इण भवमें सुरकार ।
 इण भव पर भव दुहन में, ज्ञान करै निस्तार ॥२३॥
 त्रिच पारम अरु ज्ञान के, अतर जानि महत् ।
 यह लोहा कवन करे, वह गुण तेष अनत ॥२४॥
 प्रथम ज्ञान पाछे दया, यह जिन-मत को सार ।
 ज्ञान सहित किरिया कगे, तव इतरो भव पार ॥२५॥